उतने ही टिकट आप इश्यू करें जितने को आप थर्ड क्लास में जगह प्रोवाइड कर सकते हैं। आपको पैसा लेने की ज्यादा चिंता है लेकिन ऐमेनिटीज कम देना चाहते हैं। ज्यादा ट्रेन आप चला दें वह अधिक अच्छा है बनिस्बत इसके कि ओवर क्राउडिंग कर के लोगों को तकलीफ में डालें। न तो उनको सोने की जगह मिलती है न बैठने की जगह मिलती है। इस बात पर भी आप को ध्यान देना चाहिए।

ग्वालियर में एक नैरो गेज लाइन आप ने महाराजा ग्वालियर से ली थी। जिस वक्त महाराजा ग्वालियर ने यह ट्रांसफर किया उस वक्त 70 लाख रुपये भी आप को मिले। और आज उस ग्वालियर लाइन को, जो कि नैरोगेज, है, आप देखें तो आपको मालूम होगा कि उस के डिब्बे टूटे-फूटे हैं, इंजिन की स्थिति भयंकर है, उससे आपको पैसा बहुत कम आता है। इसलिये उस को या तो आप उन को वापस कर दें और कहें कि आप ही चलाइये, लेकिन यदि आप चलाते हैं तो उसको ब्रौडगेज में कन्वर्ट कर दीजिये और उस की हालत को सुधारिये। वह लाइन ऐसी जगहों में चलती है, जहां दूसरी लाइनें नहीं जा सकती हैं।

आज जो हैल्दी-कम्पीटीशन रेलवे के साथ बस-ट्रांस्पोर्ट का और गुड्स ट्रांस्पोर्ट का हो रहा है, उस पर गंभीरता से विचार करना चाहिये। आप जनता को वे सुविधायें नहीं दे पाते हैं, जो बस और गुड्स ट्रांस्पोर्ट वाले दे रहे हैं। आपके यहां चीजें चोरी जाती हैं, स्टेशन पर कुली ठीक से माल नहीं उतारते हैं, जिससे बहुत डेमेज होता है। जब कि ट्रक वाले व्यापारी के स्थान से माल को उठाते हैं और डेस्टीनेशन पर ठीक से पहुंचा देते हैं। जब तक आप ट्रेडर्स को सुविधायें नहीं देंगे, तब तक आप हमेशा घाटे में रहेंगे, चाहे कितनी ही आप कन्टेनर सर्विस चलायें। इस लिये मेरी विनती है कि इस पर आप विशेष ध्यान दें।

एक्सीडेन्ट्स के बारे में भी एक बात आपको बताना चाहता हूं। एक्सीडेंट्स क्यों होते हैं? एक्सीडेन्ट्स होने का कारण यह है कि आपके बहुत से गेट्स अन-मैन्ड हैं। बसवाला चाहता है कि हम जल्दी से निकाल ले जायें और ट्रेन से टकरा जाता है। इस कारण से कितने एक्सीडेन्टेस हुए हैं, उस पर आपने गौर किया होगा। दूसरी चीज यह है कि ड्राइवर्स से निर्धारित समय से बहुत ज्यादा समय तक काम लिया जाता है, उन को आराम का समय कम मिलता है, जिसकी वजह से वे सो जाते हैं इस वजह से भी एक्सी-डेन्ट्स होते हैं। जितने आराम के वे एन्टाइटल्ड हैं उतना आराम उनको दिया जाना चाहिए तथा जितने भी आपके अन-मैन्ड गेट्स हैं, उन पर आदमी का प्रबन्ध करें, ताकि गाड़ी आये तो वह उस गेट को बन्द कर दे और जब चली जाय तो खोल दे। यदि आप ऐसा करेंगे तो हम समझते हैं कि एक्सीडेन्ट्स बहुत कम हो जायेंगे।

आपका बहुत धन्यवाद है कि इतना समय आपने हमें बोलने के लिये दिया।

16·52 hrs.

RE: ARREST OF MEMBERS

SHRI SAMAR GUHA (Contai) : Mr. Speaker, Sir, I want to draw your attention to one point. Two hon. Members of this House, Shri Kundu and Shri Ram Charan have been arrested just a few hours back. In Delhi, Sir, they have been arrested and it has not been reported here. They have been arrested while they were proceeding to present a memorandum to the British High Commissioner.

MR. SPEAKER : I am told just now....

SHRI NAMBIAR (Tiruchirappalli) : Sir, this is in connection with the hangings in Rhodesia.

SHRI SAMAR GUHA : I want to draw your attention to one point. They have been arrested in Delhi and it has not been.. ...

MR. SPEAKER : I have called Mr. Ahirwar.

SHRI SAMAR GUHA : Sir it has not been reported....

MR. SPEAKER : I am not going to allow it. We shall discuss what should be done.

SHRI NAMBIAR : It is the Negroes and blackmen who are being hanged, Sir.

16·53 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS (RAILWAYS) 1968-69 AND DEMANDS FOR SUPPLEMENTARY GRANTS (RAILWAYS), 1967-68—*Contd.*

श्री नाथूराम अहिरवार (टीकमगढ़) : अध्यक्ष महोदय, आज जो रेलवे बजट सदन के सामने प्रस्तुत है, मैं उस का समर्थन करने के लिये खड़ा हूं। अभी कई माननीय सदस्यों ने रेलवे के ऊपर प्रकाश डाला और हर वर्ष हम यह देखते हैं कि रेलवे में घाटा बढ़ता चला जा रहा है और उसकी वजह से भाड़ा बढ़ाया जाता है—पैसेन्जर्स का और माल का। लेकिन हम कभी इस बात पर गौर नहीं करते हैं कि यह घाटा क्यों होता है, इसकी बुनियाद में क्या खामी है, इसका मूल कारण क्या है—इस दृष्टि से हम इस पर विचार नहीं करते।

अध्यक्ष महोदय, मैं एक ऐसे क्षेत्र से आता हूं, एक ऐसे प्रांत से आता हूं जो देश का मध्य कहलाता है। जैसे शरीर में पेट होता है, अगर पेट भूखा रहे तो शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। मध्य प्रदेश एक ऐसा प्रांत है, जहां पर सब प्रकार के रिसोर्सेज हैं—मिनरल्ज हैं, लोहा है, कोयले का भंडार है, ऐसी नदियां हैं, जहां विद्युत उत्पन्न की जा सकती है, जिन से देश का बाहरी विकास हो सकता है, लेकिन मुझे दुख है कि जहां देश के अन्य क्षेत्रों में रेलों का जाल बिछा हुआ है, वहां मध्य प्रदेश में रेल एक इस किनारे से निकाली गई है और एक दूसरे किनारे से निकाली गई है, लेकिन जहां पर कोयले का भंडार पड़ा हुआ है, वहां पर कोई रेलवे लाइन नहीं है। जैसे बस्तर के क्षेत्र को ले लीजिये—वह ऐसा क्षेत्र है जहां पर लोहे का 150 मील लम्बा पहाड़ पड़ा हुआ है, हमारी राज्य सरकार बहुत समय से वहां पर रेलवे लाइन की मांग कर रही है कि वहां पर रेलवे लाइन डालकर उस क्षेत्र को एक्सप्लायेट किया जाय, ताकि वहां पर लोगों को रोजी मिले और उस क्षेत्र का विकास हो।

इसके साथ ही साथ मैं माननीय मंत्री जी का ध्यान बुन्देलखंड क्षेत्र की ओर भी दिलाना चाहता हूं, जो मध्य प्रदेश का उत्तरी हिस्सा है तथा पिछले सत्र में मैंने एक प्रश्न भी किया था, जिसके उत्तर में माननीय मंत्री जी ने बताया था कि ललितपुर-टीकमगढ़-छतरपुर-पन्ना से सतना तक की रेलवे लाइन की एक योजना शासन के विचाराधीन है, लेकिन अर्थ के अभाव में अभी हम उस योजना को ले नहीं सकते। मुझे समझ में नहीं आता है कि जब दिल्ली के चारों ओर एक रेलवे लाइन इस लिये बना रहे हैं कि कर्मचारी लोग अपने दफ्तरों में काम करने आ सकें, तो दूसरी ओर जहां काफी तादाद में सबजियां, ईमारती पत्थर, जंगलात की लकड़ी आदि सामान पैदा होता है, उस क्षेत्र का विकास सरकार क्यों नहीं करना चाहती। वहां पर गरीबी इस लिये बढ़ रही है कि आज तक उस क्षेत्र का विकास नहीं किया गया है। अगर वहां पर रेलवे लाइन बना दी जाय, तो उससे वहां का व्यापार बढ़ेगा, लोगों को रोजी-रोटी मिलेगी, उस क्षेत्र का विकास होगा। इस लिये वहां पर रेलवे लाइन का होना अत्यन्त आवश्यक है, लेकिन हमारी सरकार जो समाजवाद का नारा लगाती है—लेकिन वास्तव में हम देखते हैं कि शहरों को स्वराज्य मिल रहा है, देहाती क्षेत्र बराबर पीछे पड़ते जा रहे हैं। कहीं भी देख लीजिये—फरीदाबाद में जाइये, पूरा औद्योगीकरण हुआ है। लेकिन हमारे यहां एक इलेक्ट्रिसिटी कम्पनी को लाइसेन्स दिया गया है, उस का बोर्ड वहां पर लगा हुआ है और उस को जो जमीन एक्वायर कर के दी गई है, उस में कारखाना खोलने के बजाय गेहूं की खेती हो रही है।